पढ़ो रखो श्रृंखला

एक ख़ास पुस्तक संग्रह

नीतू यादव

बढ़ते बच्चों को सक्रिय पाठक बनाने के लिए जितने भी उपक्रम किए जाते हैं उनमें एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है– सन्दर्भयुक्त साहित्य विकसित करना। साहित्य में वंचित समुदाय की जीवन परिस्थितियों, लड़कियों का प्रतिनिधित्व, रोज़मर्रा के जीवन अनुभव और सहज घटनाक्रम का अभाव एक बड़े तबक़े को साहित्य या पाठ्येतर सामग्री से जोड़ने के उलट उससे दूर ही करता रहा है।

भोपाल में शहरी ग़रीबों की शिक्षा के लिए काम करने वाली संस्था 'मुस्कान' ने सन्दर्भयुक्त साहित्य और पठन सामग्री विकसित करने की दिशा में एक ठोस क़दम उठाया है। 2014 से 2019 के बीच 'पढ़ो रखो' नाम से विकसित की गई छोटी किताबों की यह श्रृंखला शासकीय स्कूलों में आ रहे बच्चों और शिक्षकों के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होने वाली है। नीतू यादव ने अपने आलेख में इसी श्रृंखला की किताबों का परिचय दिया है। सं.

पढ़ो रखो श्रृंखला (मुस्कान प्रकाशन) जब हम इस नाम को पढ़ते हैं तो मन में कुछ सवाल उमड़ने घुमड़ने लगते हैं। कभी ख़याल आता है कि कहीं ग़लती से 'पढ़ो लिखो' की जगह 'पढ़ो रखो' तो नहीं हो गया? 'पढ़ो रखो' से क्या मतलब रहा होगा? पढ़कर रखना क्यों है? जब इन किताबों को पढ़ा और बच्चों के साथ इन किताबों को इस्तेमाल किया तो समझ आया कि बहुत सोच-समझ कर इस श्रृंखला का नाम 'पढ़ो रखो श्रृंखला' रखा गया है। मतलब ऐसी किताबें जो पढ़ने के बाद मन में रह जाएँ और बच्चे को लगे कि यह तो हमारी ही बात है। सिर्फ़ विषय वस्तु नहीं, इन किताबों का स्वरूप, बनावट और क़ीमत, सब मिलकर इन्हें ख़ास बनाते हैं। छोटे बच्चों के लिए प्रकाशित होने वाली सबसे कम पन्नों, वज़न और क़ीमत की सचित्र किताबें, वो भी एकल कहानी वाली, शायद ही प्रकाशित हुई हों। एक किताब मात्र 12 रुपए और 24 किताबों का सेट 300 रुपए में लिया जा सकता है। कम मूल्य होने से हर तबक़े तक इनकी पहुँच मुमकिन है। इन किताबों को प्रिंट करने के पीछे एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चों के दैनिक और परिवेशीय अनुभवों का उपयोग भाषा शिक्षण में किया जा सके। इसके लिए हर किताब के अन्तिम पृष्ठ पर गतिविधि का एक पन्ना है। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को इन कहानियों में ख़ुद को शामिल करने, पठन अभ्यास और अभिव्यक्ति के अवसर दिए गए हैं। यह अभ्यास बच्चों के लिए जितने फ़ायदेमन्द हैं, उतने ही शिक्षकों के लिए भी। यह अभ्यास कहानी सुनाने के बाद बच्चों को कहानी में और गहरे तक उतारने में मदद करते हैं और एक अच्छी चर्चा का माध्यम बनते हैं। इन किताबों से जुड़े मेरे अलग-अलग अनुभव रहे हैं।

मेरे पढ़ने के व्यक्तिगत अनुभव

मैंने इस श्रृंखला की सभी किताबें पढ़ीं। कुछ किताबें जैसे– *गन्ने का बँटवारा, बैल की सवारी, सूअर का दोस्त, मधुमक्खी, तालाब के किनारे,* मुझे बहुत अच्छी लगीं। पढ़ने में एक

ख़ास तरह की ख़ुशी महसूस हुई। वहीं *सोहेल की पीली चड्डी, थाना, नाला, पानी बेचती है, बेर खाने हैं, बरसात की तैयारी* जैसी किताबों ने जीवन में बचपन से ही शुरू होने वाले संघर्षों

और वंचितताओं को महसूस करने के अवसर दिए, साथ ही एक वर्ग विशेष के जीवन के अहम हिस्सों को समझा और उनके प्रति मन में एक संवेदनशीलता और सम्मान का भाव भी महसूस हुआ।

कुछ कहानियाँ जैसे– *चटनी, कार, बहादुर कार मालिक, आज क्या किया* मुझे ख़ास अच्छी नहीं लगीं या यूँ कह लो कि उन कहानियों ने मुझे कोई ऐसा अहसास नहीं दिया जिनसे एक जुड़ाव महसूस कर पाऊँ।

बच्चों के साथ इन किताबों को पढ़ने के अनुभव

जब बच्चों के बीच यह किताबें लेकर गई तो किताबों को पसन्द करने के अनुभव मिले जुले ही थे। किसी बच्चे को *बहादुर कार मालिक पसन्द* आई क्योंकि कहानी उसके घर के पास की घटना जैसी ही थी। किसी को *चटनी* पसन्द आई क्योंकि उसे लगा यह तो उसकी ही कहानी है। किसी को *बहादुर कार मालिक* पसन्द नहीं आई क्योंकि बेचारे कार वाले की इतनी क़ीमती कार कबाड़ हो गई। पर अब तक ऐसा कोई बच्चा नहीं मिला जिसे इस संग्रह में अपनी पसन्द की कोई किताब न मिली हो।

वहीं घर बनाया, या *आज क्या किया* जैसी कहानियाँ मुझे अच्छी नहीं लगीं, लेकिन अधिकतम बच्चों ने उनको पसन्द किया क्योंकि यह उनके अपने खेल थे। यह भी कह सकते हैं कि हम जिन बच्चों के साथ काम करते हैं, यह उनके अनुभव थे जो वे कहानी के माध्यम से सुन और पढ़ रहे थे।

फ्रैंक स्मिथ के अनुसार, "पढ़ना एक निजी संसार है, हमारे रोज़ के अनुभव पढ़ते समय पढ़ने की प्रक्रियाओं में मदद करते हैं।" वे बताते हैं, "जो कुछ हम जानते हैं और जिन तथ्यों व अनुभवों पर हम विश्वास करते हैं, हमारी आशाएँ और सम्भावनाएँ सभी एक सिद्धान्त के रूप में हमारे मस्तिष्क में समाहित हो जाती हैं और पढ़ने की प्रक्रिया में मदद करती हैं।"

उपरोक्त सन्दर्भ में देखें तो बच्चों के अनुभवों से रची बुनी यह किताबें बच्चों के भाषा शिक्षण और पढ़ना सीखने में एक उम्दा ख़ुराक का काम करेंगी। शुरुआती पढ़ना सीख रहे बच्चे भी इन्हें पढ़कर समझ लेते हैं और अपने अनुभव बताने लगते हैं।

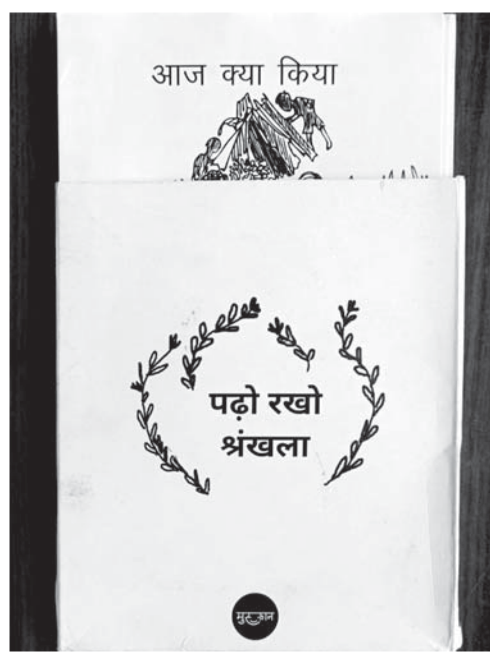

पिछले महीने ही जब विद्या, जो कक्षा 5 में पढ़ती है, को *घर बनाया* किताब पढ़ने को दी और पूछा, "कैसी लगी", तो उसने तुरन्त जवाब दिया, "बहुत अच्छी लगी दीदी। हम भी बचपन में ऐसा ही बोरी पन्नी का घर बनाकर खेलते थे और उसमें ही खाना बनाते एवं खाते थे।" बताते समय उसके चेहरे पर जो ख़ुशी थी, वो वैसी ही लग रही थी जैसी खेल में मस्त बच्चे के चेहरे पर होती है। इस किताब ने उसे वापस अपने खेल के अनुभव दे दिए।

चटनी कहानी पढ़कर इन्द्रसेन और भानुराज, जो कक्षा 4 के बच्चे हैं, पूछने लगे, "कहानी में जो मांजना और जीनू हैं वो हमारी बस्ती वाले हैं न? हम लिखेंगे तो हमारी भी किताब छपेगी क्या?"

जैसे ही कक्षा में बातचीत के अवसर बने, सब बच्चे किताबों से जुड़े अपने-अपने अनुभव सुनाने लगे। बच्चे आपस में भी इनपर बात करते हैं। बच्चे अपनी बात बोलें, इसके लिए किसी तरह के अतिरिक्त प्रयास की ज़रूरत भी नहीं पड़ी। इस बात से स्पष्ट होता है कि बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता को उभारने में परिवेशीय किताबें प्रेरक का कार्य करती हैं।

एक ख़ास बात यह रही कि चूँकि दिखने में यह किताबें बहुत रंगीन नहीं हैं, इसलिए सिर्फ़ देखकर बच्चे इनको पसन्द नहीं करते। जो बच्चे थोड़ा बहुत पढ़ना जानते हैं और जो इन कहानियों को सुन चुके हैं, उन्हें यह किताबें बहुत पसन्द आती हैं।

इनकी भाषा बहुत सरल है और कहानियों में बच्चों को अपने आसपास की ऐसी घटनाएँ एवं बच्चों के नाम पढ़ने को मिलते हैं जो उनके दैनिक अनुभवों से जुड़े हैं। बच्चे इन्हें आसानी से पढ़कर समझ पाते हैं। बच्चों के पठन अभ्यास के लिए यह किताबें एक अर्थपूर्ण सामग्री का काम करती हैं।

कच्ची बस्तियों में रहने वाले बच्चों की दिनचर्या, खेल, ज़िन्दगी और परिवेश से सम्बन्धित घटनाओं और अनुभवों को बयाँ करने वाली 24 कहानियों की यह श्रृंखला अपने-आप में एक छोटा पुस्तकालय है, जो बेहद कम ख़र्चीला है। इस अकेले संकलन से ही एक पूरे पुस्तकालय की शुरुआत की जा सकती है।

सन्दर्भ

पढ़ना यानी एक सृजनात्मक अनुभव, भाषा शिक्षण-1 अध्याय-14, यूनिट-4, (डीएलएड) एससीईआरटी, रायपुर (छत्तीसगढ़), हिन्दी प्रकाशन वर्ष 2017

नीतू यादव 2006 से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। विशेष रूप से पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक कक्षाओं में भाषा और गणित शिक्षण को अर्थपूर्ण, बालकेन्द्रित और मनोरंजक बनाने के लिए प्रयास किए हैं। वर्तमान में स्वतंत्र रूप से बतौर बाल पुस्तकालय प्रशिक्षक कार्य कर रही हैं। शोध कार्य, शैक्षिक और रचनात्मक लेखन में रुचि है।

सम्पर्क : neetu.yadav23@yahoo.in